AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

भारतीय सुरक्षा एवं हिन्द महासागर

ORIGINAL ARTICLE

Author
डॉ. समीर भार्गव
सहायक प्राध्यापक
सैन्यविज्ञान विभाग
महाराजा मानसिंह महाविद्यालय
ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध सार

बेकन का प्रसिद्ध कथन है जो समुद्र पर अधिकार करते हैं वह अपनी इच्छानुकूल युद्ध करने में स्वतंत्र होता है। इसे साथ ही सामुद्रिक शक्ति के विशेषज्ञ ए.टी. महान का सामरिक सन्देश, ''हिन्द महासागर सात समुद्रों की कुंजी है, जो भी देश हिन्द महासागर को नियंत्रित करता है वही एशिया पर वर्चस्व स्थापित करेगा तथा 12 वीं शताब्दी में युद्ध का फैसला स्थल पर न होकर सागर में होगा।'' यह दोनों भविष्यवाणियाँ आज भी अपनी प्रासंगिकता को सजीव बनाये हुये हैं।

मुख्य शब्द

हिंद महासागर, भारत, सुरक्षा.

वर्तमान युग में प्रत्येक राष्ट्र कितना भी बलशाली क्यों ना हो अपनी प्रतिरक्षा को अभेद्य नहीं सकता है। सामान्यता राष्ट्रों की यह आम रक्षा नीति होती है, कि किस तरह कम से कम शक्ति का प्रयोग करके सुरक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति अत्यधिक सीमा तक की जा सके। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए राष्ट्रों को शक्ति एवं संसाधनों तथा दायित्वों एवं शक्ति के मध्य संतुलन स्थापित करना होता है। हिन्द महासागरीय क्षेत्र के स्त्रातेजिक परिवेश के संदर्भ में हमें हिन्द महासागर के महत्व की विवेचना करनी होगी। संजीव सान्याल ने अपनी पुस्तक "The Ocean of churn" में उल्लेख किया है कि हिन्द महासागर को सगझने के लिए उसके इतिहास को जानना आवश्यक है।

हिन्द महासागर के भूगोल का जहाँ तक प्रश्न है क्षेत्रफल की दुष्टि से यह विश्व के महासागरों में तृतीय स्थान रखता है। यह एशिया तथा अफ्रीका दोनों महाद्वीपों के क्षेत्रफल के बराबर क्षेत्रफल रखता है। यह पूर्व में आस्ट्रेलिया, उत्तर में एशिया, पश्चिम में अफ्रीका और दक्षिण में अंटार्कटिका तक फैला हुआ है। हिन्द महासागर का संबंध लगभग दो अरब से अधिक जनसंख्या से है। हिन्द महासागर वर्तमान में विश्व का एक मात्र ऐसा महासागर है जो किसी भी महाशक्ति की सीमा को नहीं छूता। आदिकाल से समुद्री एवं पारस्परिक समुद्री मार्गों का यह क्षेत्र खनिज पदार्थों एवं समुद्री खाद्यान्नों में घनी रहा है। खाड़ीयुक्त (Embayed) समुद्र की आकृति वाले इस हिन्द महासागर का अधिकांश भाग स्थल से घिरा हुआ है। एशिया का दक्षिणी भाग हिन्द महासागर पर छत का कार्य करता है। भारत हिन्द महासागर में लगभग एक हजार मील तक फैला हुआ है। हिन्द महासागर के पश्चिमी प्रवेश द्वार पर अफ्रीका का केप, होरमूज का जलड़मरूमध्य, स्वेज नहर तथा बॉब–अल–मण्डेव है तथा पूर्वी द्वार मलक्का एवं सुन्ड़ा जलड़मरूमध्य है। इसके अतिरिक्त अण्डमान निकोबार द्वीप समूह, मालदीव, लक्ष्यद्वीप, सेशिलीज, माल्टा, मारीशस, चेगासद्वीप समूह तथा सकोत्रा द्वीप हिन्दमहासागर के अन्य महत्वपूर्ण द्वीप है।

भारत के दक्षिण में स्थित हिन्द महासागर पर आकर विश्व के दो तिहाई देशों के हित परस्पर टकराते हैं।

एशिया महाद्वीप के 22, अफ्रीका महाद्वीप के 12 तथा आस्ट्रेलिया महाद्वीप का एक राष्ट्र सहित कुल 35 देशों की अंतर्राराष्ट्रीय सीमा हिन्द महासागर को स्पर्श करती है। यह प्रशांत तथा अटलांटिक महासागरों से छोटा 73442700 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल वाला महासागर है। संपूर्ण ग्लोब का 14.2 प्रतिशत तथा समस्त जलमण्डल का 19.9 प्रतिशत वाला हिन्द महासागर विश्व की गतिविधियों का सर्वाधिक व्यस्त क्षेत्र है।[1] चीन, जापान आस्ट्रेलिया पश्चिम तथा दक्षिण एशिया के लिए हिन्द महासागर आर्थिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस महासागर से होकर लगभग 50 हजार पोत तथा 20 हजार से अधिक टैंकर गुजरते हैं। अमेरिका, यूरोप सहित अन्य देशों को इसी मार्ग से होकर बड़ी संख्या में सैन्य महत्व के तेल और खनिज पदार्थ भेजे जाते हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका एवं सोबियत संघ द्वितीय विश्वयुद्व के पश्चात महाशक्तियों के रूप में उभर कर सामने आए। एशिया एवं अफ्रीका के अनेक राष्ट्रों के स्वतंत्र होने के कारण ग्रेट ब्रिटेन की शक्ति क्षीण हो गई फलस्वरूप ब्रिटेन को स्वेज नहर से पूर्व के देशों से अपनी सेनाओं को हटाना पड़ा। आर्थिक रूप से कमजोर ब्रिटेन दोनों महाशक्तियों से प्रतिस्पर्धा करने की क्षमता नहीं जुटा सका किन्तु हिन्द महासागर से हटते समय 15 जून 1968 को प्रधानमंत्री हेराल्ड विल्सन ने हाउस ऑफ कॉमन्स में यह घोषणा की कि अमेरिका के साथ हुए एक गुप्त समझौते के अनुसार ग्रेट ब्रिटेन और अमेरिका दोनों के लिए संयुक्त रूप से इस क्षेत्र पर नियंत्रण करने की व्यवस्था है। ब्रिटेन की नौसेना के लिए हिन्द महासागर द्वितीय विश्व युद्ध से पूर्व एक झील के रूप में जाना जाता रहा है फलस्वरूप यूरोपीय शक्तियों ने इस क्षेत्र के देशों के धन को लगभग दो शताब्दियों तक मनमाने तरीके से लूटा।[2] आर्थिक राजनैतिक सामरिक और स्त्रात्जिक कारणों से हिन्द महासागर आज भी विश्व की बड़ी शक्तियों के आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है। महाशक्तियों ने इस क्षेत्र को अपनी शक्ति स्पर्धा और युद्धयोत कुटनीति का अखाड़ा बना दिया है। ये महाशक्तियाँ हिन्द महांसागरीय क्षेत्र में घटित हलचलों पर अपनी कड़ी नजर रखे हुए है। हिन्द महासागर का महत्व इसलिए भी अधिक है क्योंकि विश्व के अधिकांश व्यापार सघन संचार और व्यवसाय का संचालन इसी क्षेत्र से होता है। इसी कारण आज इस महासागर में बड़ी शक्तियों के बीच नौसैनिक अड्डे बनाने की होड़ लगी हुई है। हिन्द महासागरीय क्षेत्र में खनिज पदार्थों की दृष्टि से विश्व का 75 प्रतिशत सोना 27 प्रतिशत प्लूटोनियम 21 प्रतिशत क्रोमियम, लगभग 13 प्रतिशत ताम्बा 9 प्रतिशत मैगनेशियम तथा 16 प्रतिशत से अधिक यूरेनियम के भंण्डार इस क्षेत्र में विद्यमान है। पश्चिम ऐशिया में उपलब्ध पेट्रोलियम तथा छोटे–छोटे द्वीप देशों का सामरिक महत्व इस क्षेत्र में महाशक्तियों को अपने हितों की पूर्ति के लिए आमंत्रित करता है।[3] एशिया अफ्रीका और आस्ट्रेलिया को जोड़ने वाले प्रमुख जलमार्ग हिन्द महासागर से ही गुजरते हैं। विश्व की एक चौथाई जनसंख्या इस क्षेत्र के 44 देशों में रहती है। विकसित देशों में बढ़ रही कच्चे माल की मांग ने इस महासागर में उनकी सक्रियता को और बढ़ा दिया है। चाय, जूट, टिन, कोबाल्ट, ताम्बा, मैगनिज, चाँदी, लोहा, गंधक, कोयला आदि खनिज प्रचुर मात्रा में इस क्षेत्र में पाए जाते हैं। कोबाल्ट, तांबा और यूरेनियम जैसे तमाम खनिज पदार्थों की आपूर्ति पश्चिमी देशों को हिन्द महासागर के समीपवर्ती अफ्रीका देशों से ही की जाती है। सोवियत संघ (रूस) की इस क्षेत्र में मौजूदगी ने अमेरिकी हस्तक्षेप को हिन्द महासागर में बढ़ा दिया है। राजनीतिक रूप से स्वतंत्र किन्तु आर्थिक दष्टि से परतंत्र हिन्द महासागरीय राष्ट्र परस्पर संघर्षरत् है। वास्तव में भारतीयों का समुद्र से अनादि काल से सम्बन्ध रहा है। प्राचीन वैदिक साहित्य, संस्कृत, पालि और तमिल साहित्य, धर्मशास्त्र तथा कौटिल्य के अर्थशास्त्र के अतिरिक्त विदेशी इतिहासकारों की कृतियों में भारतीयों के इण्डोनेशिया, जावा, सुमात्रा, मिश्र और चीन आदि देशों से व्यापारिक वर्णन के व्यापक प्रमाण प्रस्तुत है। इसी समुद्री व्यापार को सुरक्षित रखने के लिए भारतीयों ने निश्चित ही नौ–सेना का विकास किया होगा। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में पहली बार नौ–सेना को संगठित सैन्य शक्ति के रूप में मान्यता दी गयी है जिसके सर्वोच्च अधिकारी को नौबलाध्यक्ष काहा गया है। मेगस्थनीज ने भी कौटिल्य के ही समान मौर्य सेना के इस रूप का उल्लेख किया है।[4] पोत निर्माण उद्योग का भी पूर्ण विकास मौर्य काल में हुआ। भारतीय परिप्रेक्ष्य में सामुद्रिक शक्ति को कायम रखने के प्रयासों के अनेक उदाहरण मिलते हैं जिनमें मराठों के सेनापति कान्होजी आंग्रे द्वारा ब्रिटिश फ्राँसीसी और पुर्तगालियों की सम्मिलित पराजय प्रमुख है। सामुद्रिक शक्ति के संदर्भ में कान्होजी की स्थिति भारतीय इतिहास को गौरवान्वित करती है।[5] सामुद्रिक शक्ति का तात्पर्य वास्तव में शांतिकालीन और युद्धकालीन महत्व के आधार बिन्दुओं (व्यवसायिक समुद्री बेड़े की उपयोगिता से लेकर रण क्षेत्र में युद्ध सामग्री भेजने तक) पर अपना वर्चस्व स्थापित करने से है। सामुद्रकि शक्ति का अभिप्राय मात्र

युद्धपोतों से ही नहीं है वरन् इसके अन्तर्गत वे सभी उपकरण शस्त्रास्त्र तथा भौगोलिक परिस्थितियाँ सम्मिलित होती हैं, जिनके द्वारा एक राष्ट्र युद्ध के समय समुद्री यातायात को नियंत्रित करने में समर्थ होता है। सामुद्रिक शक्ति समुद्र पर नियंत्रण करने की शक्ति के साथ समुद्र का उपभोग करने की क्षमता भी प्रदान करती है। यह केवल नौ सेना को ही प्रभावित नहीं करती अपितु व्यापारिक जलपोतों को भी प्रभावित करती है, जो अति महत्वपूर्ण है।[6] पश्चिमी यूरोप के लोग सदैव समुद्र से प्रभावित रहे है। उन्होंने इसका यथेष्ट लाभ उठाकर अपनी नौ सैनिक शक्ति को सुदृढ़ करने का प्रयास किया है। इंग्लैण्ड, फ्रान्स, पुर्तगाल हालेण्ड व इटली उन देशों की श्रृंखला में आते हैं जिनका समुद्री इतिहास काफी प्रभावपूर्ण एवं प्रशंसनीय रहा है। विश्व के अधिकांश राष्ट्र मध्य–पूर्व के तेल निर्यातक देशों पर निर्भर है। हिन्द महासागरीय क्षेत्र से अमेरिका 8 प्रतिशत, फांस 51 प्रतिशति जर्मनी 62 प्रतिशत, ब्रिटेन 66 प्रतिशत, आस्ट्रेलिया 65 प्रतिशत इटली 85.5 प्रतिशत तथा जापान 90 प्रतिशत तेल अपने देश को आयात करता है।

द्वितीय विश्व युद्ध से पूर्व किसी भी राष्ट्र की हिन्द महासागर में कोई विशेष रूचि नहीं थी। युद्ध की समाप्ति पर साम्यवाद के प्रसार को रोकने के उद्देश्य से अमेरिका ने सोवियत संघ एवं चीन को घेरने के लिए उनके चारों ओर सैन्य अड्डों की स्थापना का कार्य प्रारंभ कर दिया। हिन्द महासागरीय क्षेत्र भी इस कार्यवाही से अछूता न रह सका। वास्तव में अमेरिका का उद्देश्य सेन्टो और सीटो जैसी सैन्य संधियों के माध्यम से एशिया एवं अफ्रीका के नवस्वाधीन राष्ट्रों को अपने खेमें में लाने का था। इस क्षेत्र में अपनी स्थिति को और मजबूत करने की दृष्टि से उसने ब्रिटेन को अपना मोहरा बनाया। ब्रिटेन ने मॉरीशस से ''डिआगो गार्सिया'' को पट्टे के आधार पर खरीद लिया। ब्रिटेन और अमेरिका दोनों ने दिसम्बर 1970 को इसे नौ संचार केन्द्र के रूप में परिवर्तित करने का एक समझौता किया। हिन्द महासागर तथा दक्षिण पश्चिम एशिया में 1980 तक अमेरिका को 13 सैनिक अड्डों की सुविधायें प्राप्त थी। 1982 के वित्तीय वर्ष में अमेरिका ने हिन्द महासागर के क्षेत्र में नौ सैनिक तथा वायु सैनिक अड्डों के आधुनिकीकरण हेतु 74.66 करोड़ डालर की धनराशि आबंटित की थी।[7] हिन्द महासागर के क्षेत्र में हुई प्रत्येक गतिविधि का भारतीय सुरक्षा पर सीधा प्रभाव पड़ रहा है। इसी संदर्भ में डीयागो गार्सिया के महत्व को उपरोक्त पृष्ठभूमि में समझाना आवश्यक है। हिन्द महासागर में डीयागो गार्सिया एक प्रवाल द्वीप है जो भारत से लगभग 1200 नाटीकल मील की दूरी पर स्थित है। यह प्रवाल द्वीप 14 मील लम्बा तथा 5 मील चौड़ा घोड़े की नाल के आकार का द्वीप है। यह चेगास द्वीप समूह का ही दक्षिणी द्वीप है। हिन्द महासागर के लगभग केन्द्र में स्थित इस द्वीप पर एक बंदरगाह का निर्माण किया गया है। यह अमेरिका एवं ब्रिटेन का एक संयुक्त नौ सैन्य अड्डा है। डियोगो गार्सिया पर 43.80 करोड़ डॉलर से अधिक खर्च कर अमेरिका ने अपनी हवाई पट्टी का विस्तार कर 8000 फुट से बढ़ाकर 12000 फुट कर दिया है, ताकि वहाँ पर सी–130 और सी–141 मालवाहक विमानों, दूरमारक बमबर्षकों, यू–2 जासूसी विमानों और बी–52 बमवर्षक को ईधन की आपूर्ति के लिए के.सी. 135 हवाई टैंकरों की सुविधायें प्रदान की जा सके। इसके साथ ही आणविक पनडुब्बी परमाणू बमों को ले जाने वाले बी–52 वायुयानों तथा पी–3 ओरयिन पनडुब्बी विरोधी हैलीकोप्टरों को प्रयोग में लाने की व्यवस्था की गई है। अमेरिका ने इस प्रवाल द्वीप को नौसैन्य संचार व्यवस्था का केन्द्र बनाते हुये, एक सुदृढ़ नौसैन्य अड्डे के रूप में परिवर्तित कर दिया है।[8] सन् 1971 के भारत पाक युद्ध के पश्चात् अमेरिका ने अपने सातवें में समुद्री बेड़े का कार्यक्षेत्र हिन्द महासागर तक बढ़ा दिया जिसमें एण्टरप्राइज नाम का वायुयान वाहक युद्धपोत भी है। सन् 1972 के तेल संकट तथा सन् 1973 के अरब–इजराइल युद्ध ने इस बेड़े के कार्यक्षेत्र को अरब सागर तक बढ़ा दिया। अमेरिका डियागो गार्सिया के विस्तार के बाद हिन्द महासागर के लिए एक स्वतंत्र बेड़े अर्थात 5वे बेड़े की स्थापना पर विचार कर रहा है।[9] इतना ही नहीं अमेरिका डियागो गार्सिया के आस–पास सात ''तैरते शास्त्रागार'' रखने की भी योजना बना रहा है। अमेरिका ने हिन्द महासागर में सिमान्सटाउन (दक्षिण अफ्रीका) से लेकर नोर्थवेस्ट कैम्प एवं काकबर्न साउण्ड (आस्ट्रेलिया) तक अपने अड्डों की एक श्रृंखला खड़ी कर दी है। इसके अतिरिक्त वह त्रिकोमाली, चटगांव, पेशावर और ग्वादर में भी सैन्य अड्डों की तलाश में है। अमेरिकी पोलरिस पनडुब्बियों के अरब सागर में आते ही 1968 में रूस की रूचि हिन्द महासागर में जाग गई।[10] अमेरिका की इस कार्यवाही से क्रेमलिन को हिन्द महासागर में युद्धपोतों, पनडुब्बियों तथा इलैक्ट्रोनिक फिंशिग पोतों को भेजने के लिए मजबूर कर दिया। दक्षिणी यमन का सकोत्रा, रूस के युद्धपोतों के ठहरने का महत्वपूर्ण बन्दरगाह बन गया

है। फ्रान्स ने भी जिबूती और रियूनियन द्वीपों पर अपने अड्डे स्थापित कर लिये हैं।[11] चीन ने तनजानियाँ के दार–एस–सलाम में एक नौसैन्य अड्डे का निमार्ण कर लिया है। इसके साथ ही हिन्द महासागरीय राष्ट्रों में से कुछ जगहों (बंगलादेश श्रीलंका, म्यांमार आदि) पर नौ सैन्य अड्डे स्थापित करने का प्रयास कर रहा है।[12] चीन उद्योगों को और अधिक सुदढ़ करने के लिए विकसित यूरोपीय देशों से हिन्द महासागर के माध्यम से ही सहायता प्राप्त कर रहा है। जापान का जहाँ तक प्रश्न है उसे अपनी आवश्यकता का अधिकांश खनिज तेल हिन्द महासागर से ही प्राप्त होता है। जापान भारत से लाखों टन कच्चा लोहा आयात करता है। वह तटवर्ती देशों से कच्चा माल आयात कर उन्हें अपना औद्योगिक माल निर्यात कर रहा है। अतः जापान अपने व्यापार की रक्षा हेतु हिन्द महासागर में अपनी नौ सेना लाने का प्रयास अवश्य करेगा।[13]

पारस्परिक तनावों के परिणाम स्वरूप द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् अधिकांश युद्ध अथवा सैन्य टकराव प्रायः इसी क्षेत्र में हुये हैं, और हो रहे हैं। हिन्द महासागर के अधिकांश तटवर्ती देश परस्पर संघर्षरत् हैं, तथा इनमें आपसी सहयोग की कमी देखी जा रही है। अधिकांश तटवर्ती देशों के आर्थिक दृष्टि से कमजोर होने का फायदा उठाकर महाशक्तियाँ इन्हें आपस में संघर्षरत् कराने का कार्य कर रही हैं।[14] एशिया की महाशक्ति चीन अपने धनबल के आधार पर विपन्न होते पाकिस्तान, नेपाल, बांगलादेश एवं श्रीलंका को आर्थिक सहायता प्रदार कर उन्हें भारत के विरूद्ध कार्य करने के लिए उकसाता रहता है।

उपरोक्त वर्णन से स्पष्ट हो जाता है कि हिन्द महासागर अब शक्ति संघर्ष का अखाड़ा बन गया है। इससे यह प्रतीत होता है कि भविष्य में भी अमेरिका, रूस, चीन एवं जापान सहित बड़ी शक्तियाँ हिन्द महासागर में सक्रिय रहेंगी। इसमें भी संदेह नहीं है कि भविष्य में समय–समय पर उनके हित आपस में टकराएंगे, जिसका सीधा प्रभाव हिन्द क्षेत्र के तटवर्ती देशों पर पड़ेगा। स्पष्टतः हिन्द महासागर के तटवर्ती राष्ट्रों को संघर्ष के मार्ग को त्याग कर सहयोग के मार्ग पर चलना चाहिए। तटवर्ती राष्ट्रों को चाणक्य की नीति अर्थात् शत्रु को मित्र बनाने की नीति का अनुशरण करना चाहिए। इन देशों को प्राथमिकता के आधार पर आर्थिक दृष्टि से आपसी व्यापार को प्रोत्साहन देना चाहिए। केनिया, तंजानिया, इण्डोनेशिया तथा भारत के कच्चे माल एवं वैज्ञानिक व तकनीकी ज्ञान और ईरान के पेट्रोडालर की सहायता से इन देशों को आर्थिक दृष्टि से शक्तिशाली बनाया जा सकता है। हिन्द महासागर पर प्रभावशाली नियंत्रण ही इन तटवर्ती देशों में भाग्य का निर्माण करेगा। जब तक उनका नियंत्रण हिन्द महासागर पर बना रहेगा तब तक वे अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति पर अपना प्रभाव डालते रहेगें। संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा द्वारा 26वें अधिवेशन में हिन्द महासागर को शांति क्षेत्र घोषित किये जाने से ही उद्देश्य की पूर्ति नहीं होगी, क्योंकि प्रस्ताव के समानांतर ही बड़ी शक्तियों द्वारा नौ सैन्य अड्डे स्थापित करने की जी तोड़ कोशिश की जा रही है। हिन्द क्षेत्र के तटवर्ती देशों को उनकी चालों से सतर्क रहना होगा। सतर्कता एवं सजगता से ही उनकी स्वतंत्रता सुरक्षित रह सकती है। भारत के दृष्टिकोण से हमारी भौगोलिक स्थिति इस प्रकार की है कि हमें अपनी सम्पूर्ण सामरिक, स्त्रात्जिक और सामुद्रिक व्यापार की सुरक्षा के लिए हिन्द महासागर पर निर्भर रहना पड़ता है। भारत को हिन्द महासागर में स्थित अपने समुद्री मार्गों एवं व्यापार की सुरक्षार्थ अन्य तटवर्ती देशों के साथ न केवल राजनैतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक संबंधों को स्थापित कर, इनमें यथासम्भव सुधार भी करते रहना चाहिए। भारत को संयुक्त सैन्य अभ्यास भी करते रहना चाहिए तभी वह स्थानीय नियंत्रण व संतुलन बनाये रख सकता है।[15]

निष्कर्ष

अतः हम कह सकते हैं कि हिन्द महासागर भारत के लिए प्रकृति की ओर से प्रदत्त एक बहुमूल्य अपहार एवं अनमोल खजाना है। भारत वर्ष की जनसंख्या का बहुसंख्यक भाग प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से हिन्द क्षेत्र पर निर्भर है। भारत को हिन्द महासागर पर स्वयं अथवा अन्य देशों के सहयोग व समर्थन से नियंत्रण स्थापित कर लेना चाहिए। इसके लिए भारत को स्वतंत्र हिन्द महासागरीय बेड़े का भी गहन शीघ्र कर लेना चाहिए। भारतीय सुरक्षा के लिए यह परम आवश्यक है।

संदर्भ सूची

1. Kavic, L.J. (1981) *India's Quest for Security,* EBD Publishing & distribution Company Dehradun (UK), p. 01.
2. Kohili, S.N. (1984) *Indian Ocean,* Mc Graw – Hill Education Publishing Noida (UP), p. 54.
3. सिंह, अशोक कुमार (2018) *राष्ट्रीय सुरक्षा सिद्धान्त एवं व्यवहार,* प्रकाश बुक डिपो, बरैली (उ.प्र.), पृ. 123।
4. सिंह अशोक कुमार, वही पृ. 124।
5. सिंह अशोक कुमार, वही पृ. 129।
6. सिंह के.आर. (2005) *पोलिटिक्स ऑफ इण्डियन ओशियन,* देहली थॉमसन प्रेस, देहली, पृ. 9–10।
7. सिंह अशोक कुमार, वही पृ. 129।
8. I.D.S.A. Journal, Manohar Parrikar Institute for defence Studies and Analyses New Delhi, Jan-March 1978 p. 261.
9. Ibid, p. 56.
10. Times of ndia, April 15, 1979
11. सिंह अशोक कुमार, वही, पृ. 132।
12. श्रीवास्तव जे.एम. (2017) *राष्ट्रीय सुरक्षा,* ए.एस.आर. पब्लिकेशन्स, लखनऊ (उ.प्र.), पृ. 559।
13. I.D.S.A. Journal, Manohar Parrikar Institute for defence Studies and Analyses New Delhi July – Sep. 1977.
14. श्रीवास्तव जे.एम., वही, पृ. 561।
15. I.D.S.A. Journal, Journal, Manohar Parrikar Institute for defence Studies and Analyses New Delhi January – March 1978.

——==00==——